International Journal of Applied Research 2014; 1(1): 85-89

International Journal of Applied Research

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2014; 1(1): 85-89
www.allresearchjournal.com
Received: 08-11-2014
Accepted: 11-12-2014

Author:
अवधेश कुमार
शोध–छात्रा–संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली–110007

वंदना रानी
शोध–छात्रा–संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली–110007

कृत् प्रत्यय में अनुबन्ध का प्रयोजन

अवधेश कुमार , वंदना रानी

व्याकरण शास्त्रा के स्वर्णिम जगत् में पणिनि का नाम आदरपूर्वक लिया जाता है। यद्यपि पाणिनि से पूर्व अनेक विद्वानों ने भी व्याकरण क्षेत्रा में अपना योगदान दिया है तथापि व्याकरण रूपी छत्रा का एक मूल व दृढ़ स्तम्भ पाणिनि को ही माना जाता है।

पाणिनि ने अपने सम्पूर्ण व्याकरण को अष्टाध्यायी नामक ग्रंथ में बड़ी कुशलता के साथ संकलित किया है, जो अपने आप में ही एक विशिष्ट कार्य है। उनके ग्रंथ की सर्वप्रथम विशेषता उसका लाघु रूप है, उन्होंने अपने व्याकरण को लघुतम एवं सरलतम् बनाने का भरसक प्रयास किया है। इस कला में अनुवृत्ति, अधिकार, प्रत्यहार, अनुबन्ध आदि मुख्य सहायक है।

पणिनि के ग्रंथ को लघु बनाने में अनुबन्ध का विशेष योगदान रहा है, इन्हें इत्सजक भी कहा जाता है– 'गच्छतीति इत्' अर्थात् जो जा रहा है वह इत् है। 'इत्व्' अर्थात् अनुबन्ध तो चला जाता हैं परनतु उसे मानकर कार्य किए जाते हैं। जैसे– 'घ×्' में '×्' की इत्संज्ञा होकर '×ित्' के कार्य होंगे।

1. अनुबन्ध्नमनुबन्धः भाव में ;घ×्द्ध
2. अनुबध्यते{नुबन्धः ;कर्म में घ×्द्ध
3. अनुबध्नात्यनेनानुबन्धः ;करण में ध्मद्ध

इत्संजक सूत्रा – उपदेश{जनुनासिक इत्, (v- 1.2 3) हलन्त्यम् (v-1-3-3, चुटू v-1-3-7), षः, प्रत्ययस्य, (v- 1-3-6) आदि×िाअटुदवः, (v- 1-3-5) लशक्वताधिते 1.3.8 महाभाष्यकार पतांजलि द्वारा ग्रंथ में प्रतिपादित अनुबन्ध के कुछ उदाहरण–

1. अनुबन्धकरणर्धिश्चि वर्णानामुपदेशः 1 अनुबन्धनासघ्क्ष्यामि इति। न ह्यूनपदिश्य वर्णाननुबन्धः शक्या आसघ्क्तुम इति। – महाभाष्य
2. अनुबन्ध्सघ्करस्तु प्रप्नोति 'कर्मण्यण' आतो{नुपसर्गे कः v-3-2-3
   के{पि णित्कृतं प्रक्नोति।
3. प्रत्याहारे अनुबन्धनां कथमज्ग्रहणेषु ग्रहण नं।

कित् प्रत्यय– जिनका 'क' इत् चला जाए अर्थात् ऐसा प्रत्यय जिसके 'क' वर्ण की इत्सज्ञा हो जाए तो वह 'कित्' कहलाता है। 'लशक्वतधिटे' सूत्रा से 'क' की इत्संज्ञा होती है। कृत, क्त, क्यप्, क्यच्, क, क्विन, क्विप, कभ्, कप्, कि, किन्, कुरच्, क्तवतु
क्तिन, क्सरच्, टक् ऐसे प्रत्यय हैत्र जो कि 'कित्' होते हैं।
'कित्' होने के प्रयोजन

ग्रणवृधि, प्रतिषेध	**सम्प्रसारण**	**अकार का लोप**
अनुनासिक लोप	ईत्व	शासकी उपध को
उपध लोप	इकारादेथ	विकल्प से इकारदेश
दृ आदेश	घुसंजक दा को त	छुंकार वकार
नकार को आतव	अनुनासिकांत अर्धैकी	उठ् निषेध
	उपध को दीर्घ	

1. ग्रणवृधि प्रतिषेध – विद् कुरच् — षुगन्तलघुपध्स्य च (7-3-86) से लघुपद होने पर गुण प्राप्त था परन्तु 'कित्' होने के कारण 'क्घति च' (v-1-1-5) से निबंध हो जाएगा'

Corresponding Author:
वंदना रानी
शोध–छात्रा–संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली–110007

विदुरः	रूपसिध होता है।
2. सम्प्रसारण – ग्रह + क अ	'कित्' होने पर 'ग्रहिज्यवयिव्यध्विष्टिविचतिवृश्चति पृच्छतिभृज्जतीनाधिति च' (v-6-1-16) से सम्प्रसारण होकर
ग्रहम्	
3. आकार लोप –ग्लै हर्षक्षये	'कित्' होने के कारण 'आतो लोप इति च' (v-6-4-64) से
ग्लै + क ग्ला + क अ	अकार लोप ;ग्लै को आ आदेच उपदेषे{शित से होगा।
4. अनुनासिकं लोप– गम् + क्त्वा	'कित्' होने के कारण 'अनुदात्तोपदेश वनतितनोत्यादीनामनुनामिकलोपो–
गत्वा	झलि किघति' (v- 6-4-37) से अनुनामिसक लोप
5. ईत्व – गै–क्त	कित् होने के कारण –घुमास्थागापाजहातिसां' हलि (v-6-4-66) से ईत्व
गीतम्	
6. शास की उपध को इत्व – शासु + क्तवतु	कित् होने के कारण 'शास इद्ड्हलोः' (v- 6-4-34) सूत्रा से ईत्व होगा।
शिष्टवान्	
7. उपधलोप–	किंतु होने पर 'गमहनजनसनघसांलोपिः क्घित्यनघि (v-7-440) से इकार आदेश
8. इकारादेश – दो क्तिन् दितिः	कित् होने पर 'द्यतिस्यातिमास्थामिति किति' (v- 7-4-40) से इकार आदेश से
9. विकल्प से इकारादेश द्यो + क्त्वा	कित् होने पर 'शाच्छोरन्यतरस्याम्' (v-7-4-41) विकल्प से
दितिः	इकार आदेश
10. दि आदेश ध के स्थान पर – ध+कित्	कित् होने पर 'दधतेर्हिः (v-7-4-42) से हि' आदेश ध के स्थान पर
11. घुसजक दा को दद् दा + कत्वा	कित् होने पर 'दो दद् घोः (v-6-4-46) ने दद् आदे
दत्तवा	
12. घुसंजक दा का तकारादेश – प्र दा + क्तिन	कित् होने पर 'अच उपसंगति् तः (v-7-4-47) इस सूत्रा से
प्रतिः	'डुदा×ा' दाने घुसंजक दा धतु को तकार आदेश
13. इट् निबंध – श्रि + क्तवतु	कित् होने पर 'श्रयुकः किति' 'आर्धधतुकस्येड् वलादेः (v-7-2-35) से वलादि आर्ध्धतुक परे रहते 'इट्' प्राप्त था। परन्तु
श्रितवान्	कित् होने से 'श्रयुकः किति' (v-7-2-11) से इट् निषेध
14. चर् पफल् क अकार को उत्व – चर् + वत	कित् होने पर 'तिच' ;अ.7.4.89द्ध से 'चर्' के अकार को
चूरः	को उत्व
पफल + क्तिन् पुफलितः	
15. अद् को जग्ध आदेश – अध् + क्त्वा	कित् होने पर 'अदो जग्ध्ल्यरितकिति' (v-2-4-36) से जग्ध
जग्ध्वा	आदेश
16. नकार को अत्व – जन् + क्त जातः	कित् होने पर जनसनखनां सम्भफलोः' (v-6-4-40) से नकार को आत्व
17. अनुनासिकान्त अर्धैं की उपध को दीर्घ –	
शम् + क्त	कित् होने पर 'अनुनासिकस्य क्विझलोः क्घिति (v- 6-4-15) से उपध दीर्घ 'अलो{न्त्यात्पूर्व उपध' (v-1-1-64) से उपध संज्ञा
शान्त	
19. ज्वरादि अर्धौं के वकार की उपध को	कित् होने पर ज्वतत्वरास्रि व्यविमवामुयधन्याश्य' (v-6-4-
जूर्णः	उड् आदेश ज्वर + क्त 20द्ध से उर् आदेश

20. रेपफ से उत्तर छकार वकार लोप– कित् होने 'राल्लोप' (v-6-4-21) से 'छ' का लोप

मूर्छा + क्त मूर्तः

कित् अनुबन्ध होने पर हुए प्रयोजनों के कार्यों को करने के पश्चात् 'खित्' प्रयोजन

खित' प्रयोजन

खित् होने के प्रयोजन

1. मुमागम

2. खिदन्त पद पूर्व में हो तो उसके अक् को ह्रस्व आदेश होता है क्विप् प्रत्यय – खच्, खश्, खुक×ा्, जुकम, ख्युन्, लशक्वतधिते के 'ख' की इत्संज्ञा होने पर ये 'खित्' हो जाते हैं।

3. छकार को वाकारादेश – विच्छ् + नघ् घित् होने के कारण यहाँ 'च्छ्वोः शूडनुनासिके च' (v- 6-4-19) से 'च्' को शकार आदेश हो जाना।

विश्नः

4. आकार का लोप – प्रदा + अघ् घित् होने पर 'आतो लोप इटि च' (v- 6-4-64) से आकार का लोप हो जाएगा।

प्रद् अ – प्रदा

चित् प्रयोजन

चित् करने का प्रयोजन स्वरों के लिए किया जाता है, अचं, दृचं, वाचं को छोड़कर सर्वत्रा अन्तोदात्त।

चित् प्रत्यय– अच्, आलुच्, इष्णुच्, कुरच्, क्मरच्, खच्, खिष्णुच्, खुरच्, चानश्, तृच्, युच्, वरच्, विच् आदि ऐसे प्रत्यय हैं जिसका 'च' वर्ण इत्संजक होता है।

चित् करने के प्रयोजन

चित् प्रत्यय करने के 4 प्रयोजन होते हैं–

1. अच् वृधि, 2. उपध वृधि, 3. युगागम्, 4. आदि उदात्त करना

×िात् प्रत्यय उक×ा्, क×ा्, खुक×ा्, ×युट्, वु×ा् 'हलन्त्यम्' से इत्सांझक 'म' की इत्संज्ञा होने पर प्रत्यय ×िात् हो जाएगा।

1. अच् वृधि – प्रभ् + उकम् '×िात्' होने के कारण अचो त्रिाणति। से अजन्त भघैं' को वृधि।

2. उपध वृधि – कव्यवह् + ×युट् 'चुटु' में '×ा्, की इत्संज्ञा होकर '×िात्' होने पर 'अत उपधायाः ;अष्ट. 2.116द्ध से उपध को वृधि।

कव्यवाहनः

3. युगागम् – उपस्थ + उक×ा् '×िात्' होने पर आतोयुकचिण्कृतोः (v-7-3-73) से 'युक्' आगम

उपस्थायुकः

टित् करने का प्रयोजन

1. घीप करना

टित् प्रत्यय – ×युट्, ट, टक्, ण्युट्, किट् 'चुटू' से 'ट' की इत्संज्ञा होने पर वह प्रत्यय 'टित्' हो जाता है। इसका एक ही प्रयोजन होता है।

डीप् करना – कुरुचर् + डीप् रित् होने पर यहां टिड्ढाण×ा्द्वयसज्दघ्न्य×मात्राच्तयप्ठकठ×ा्क×ा्क्वरपः' (v-4-1-15) से 'घीप्' प्रत्यय होता है

कुरुचरी

डित् करने के प्रयोजन

डित् करने का एकमात्रा प्रयोजन 'टि' भाग का लोप करना होता है। डित प्रतयय – ड, ड्×ा्, डु, संस्कार जन् + अ

डित् होने पर 'डित्सामर्थ्याद् अभ्स्यापि टेर्लोपः' इस वार्तिक से टि भाग का लोप

संस्कार ज् अ संस्कारजः

णित् प्रयोजन

णित् प्रयोजन करने के 4 प्रयोजन है–

1. अच् वृधि, 2 उपधवृधि, 3. युगागम, 4. नकार को ताकरादेश चुट् से'ण' की इत्सेजा होने पर वह 'णिसत्' प्रत्यय हो जाता है।

णित् प्रत्यय–	अण्, घिनुण, ण, णिनि, ण्यत, ण्युट्, ण्वि, ण्विन्, ण्वुल्।
1. अच् वृधि– कुम्भ + कृ + अण्	णित् होने पर 'अचोि×णति' से धतु के अच् को वृधि हुई।
कुम्भ + कृ + अण् कुम्भकारः	
2. उपध वृधि	
प्रमद + घिनुण	'णित्' होने पर 'अतो उपधया' से उपध को वृधि।
प्रमादी	
3. युगागम – स्था णिनि	'णित्' होने के कारण 'आतोः युक् चिण्कृतोः' से आ को युक् आगम
स्थायी	
4. नकार को वकारादेश– कुमार हन् + णिनि	णित् होने पर 'हनस्तो[चिण्णलोः (v-7-3-32) से नकार को तकार आदेश हुआ।
कुमारघाती	

नित् प्रयोजन

क्विन् प्रत्यय को छोड़कर नित् करने का प्रयोजन आदि उदात करना एवं प्रकृतिस्वर करना होता है।

नित् प्रत्यय– अतृन्, इन्, क्विन्, कुकन्, क्लुकन्। पित् प्रयोजन

पित् प्रयोजन तुक् आगम करता है। इण् + क्यप् कित् होने पर '"स्वस्य पितकृति तुक्' से तुगागम।

इत्यः

रेपफ प्रयोजन

रेपफ करने का प्रयोजन रित्प्रत्ययान्त उपोत्तम को उदात करना है। 'उपोत्तम रिति सूत्रा (v-6-1-21) से

जहां तीन स्वर होते हैं वहां अंतिम से पहले वाला स्वर उपोत्तम कहलाता है।

लित् प्रयोजन

लित् होने से 'लिति' (v-6-1-187) इस सूत्रा से प्रत्यय से पूर्व को उदात्त होता है।

शित् प्रयोजन

शित करने पर सार्वधतुक संज्ञा मानकर शपादि विकरण होते हैं। कहीं पिब आदेश ,घित् में 'क्घिति च' से गुण प्रतिषध, आकार–लोप, उपध–लोप इतयादि कार्य होते हैं।

शित् प्रत्यय – ध्श्, चानश्, श, शानन्, शित् प्रत्यय है।

सार्वधतुक – उत् पा	शित् होने के कारण 'कर्तरि शप्' (v 3-1-68) से 'शप्' विकरण होकर सार्वधतुक संजा होगी 'तिघ् शित सार्वधतुकम्' (v - 3-4-113) से
उत्पिबः	
पूघ् + शानन्	शित् होने पर 'कर्तरि शप्' से शप् होकर तिघ्शिसत् सार्वधतुकम्' से सार्वधतुक संज्ञा होगी।

पवमानः

उत् पा + शित् होने पर 'पाघ्राध्मास्थम्नादाण्दृश्यतिसर्तिशादसदां पिवजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छधैशीयशीदाः' (7-3-78) से यथासंख्य आदेश होकर

उत्पिबः

शित् होने पर पित् सार्वधतुक नहीं रहते जिससे कि 'सार्वधतुकमपित्' से घिद्वद् होकर 'क्ङिति च' से गुण वृधि प्रतिषेंध होगा।

1. उपध लोप–

हन+चानश् शित् होने पर 'गमहनजनसनघसां लोपः' क्ङित्यनघि्' से उपध लोप

निघ्नानः

2. आकार लोप–

घ्रा + श शित् होने पर 'आतो लोप इटि च' से आकार का लोप तथा घ्रा को जिघ्र आदेश

जिघ्रः

षित् प्रयोजन

जिसके 'ष' अनुबन्ध की इत्संज्ञा हो वह 'षित्' कहलाता है। षित् करने का एकमात्रा प्रयोजन 'षिद्गौरादिभ्यश्च' से

पित् प्रत्यय षाकन् ष्वुन् ष्ट्रन् ङीष् करना है।

वृ + षाकन् 'षित्' होने के कारण 'षिद्गौरादिभ्यश्च्' (v- 4-1-41)से 'ङीष्' प्रत्यय होकर

बराकी